अध्याय ·7·

मुद्राराक्षस के असंगत नाटक : समन्वित मूल्यांकन

BARR. BALASAHEB KHARDEKAR LIBRARY
SHIVAJI UNIVERSITY
SHIVAJI UNIVERSITY
LIBRARY
KOLHAPUR

अध्याय : 7

मुद्राराक्षस के असंगत नाटक : समन्वित मूल्यांकन

आधुनिक हिन्दी नाटकों का सूत्रपात भारतेन्दु हरिश्चन्द्र के नाटकों से ही माना जाता है। उन्होंने मुख्यतया रंगमंच को ध्यान में रखकर ही अपने नाटक लिखे, जो कथ्य,शिल्प, शैली तथा मंचीयता की दृष्टि से अपना विशेष महत्त्व रखते हैं। तत्पश्चात प्रसाद जैसे अभिजात कवि ने स्वच्छन्दतावादी नाटक लिखकर और लक्ष्मीनारायण मिश्र ने समस्यामूलक नाटक लिखकर हिन्दी नाटक साहित्य में महत्त्वपूर्ण योगदान दिया।

स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटककारों में जगदीशचंद्र माथुर एक ऐसे नाटककार है जिन्होंने हिन्दी नाटक साहित्य में एक क्रांतिकारी परिवर्तन उपस्थित किया। "कोणार्क", "शारदीया", "पहला राजा" उनके विशेष उल्लेखनीय नाटक हैं। तत्पश्चात् मोहन राकेश और डॉ॰लक्ष्मीनारायण लाल ने हिन्दी नाटक साहित्य को एक नया मोड़ देकर उसकी श्रीवृद्धि की। मोहन राकेश के "आषाढ़ का एक दिन", "लहरों के राजहंस" और "आधे अधूरे" तथा डॉ॰लाल के "मिस्टर अभिमन्यु", "सूर्यमुख", "अब्दुला दीवाना", "व्यक्तिगत", "सबरंग मोहभंग", "काफी हाऊस में इंतजार" आदि बहुचर्चित एवं बहुमंचित नाटक हैं।

साठोत्तरी हिन्दी नाटक साहित्य में अनेक नई प्रवृत्तियों के दर्शन होते हैं। इस काल में लोक-नाट्य परम्परा, काव्य-नाटक, अनूदित नाटक, नुक्कड नाटक, बाल रंगमंच, कविता, कहानी और उपन्यास के नाट्य रूपांतर या मंचन तथा असंगत नाट्य-शिल्प को लेकर कई नये प्रयोग किये गये हैं, जिनमें असंगत नाट्य-शिल्प का अपना महत्त्वपूर्ण स्थान है। मानव जीवन की विभिन्न विसंगतियों को उद्घाटित करने वाली यह एक नयी नाट्य-प्रवृत्ति है। आज का मानव मुख्यतया टूटा, हरा-थका और नित्य के जीवन से ऊबा हुआ प्राणी है। अतः ऐसे मानव जीवन की विभिन्न विसंगतियों को यथार्थ के धरातल पर चित्रित करना असंगत नाटककारों का सर्वप्रमुख उद्देश्य है। आज कल मानव जीवन में प्रचुर मात्रा में मूल्य-विघटन दिखाई देता है जिसके परिणामस्वरूप कई तरह की विसंगतियाँ

उभर रही हैं। असंगत नाटककार अपने नाटकों के माध्यम से इन सभी विसंगतियों को प्रस्तुत करता है।

हिन्दी नाटक साहित्य में असंगत नाटक का आरंभ भुवनेश्वर प्रसाद के "कारवां तथा अन्य एकांकी" में संकलित "ऊसर" तथा "ताँबे के कीड़े" से होता है। वास्तव में "ताँबे के कीड़े" न केवल हिन्दी में बल्कि विश्व-साहित्य में भी असंगत नाट्य-परम्परा की दृष्टि से सर्वप्रथम रचना कही जा सकती है। भुवनेश्वर के बाद असंगत नाट्य परम्परा में महत्त्वपूर्ण योगदान देने वाले हिन्दी नाटककारो में डॉ॰विपिनकुमार अग्रवाल का नाम उल्लेख्य है, जिन्होंने "तीन अपाहिज" और "लोटन" आदि असंगत नाटक लिखकर इस परम्परा को टूटने न दिया। इन नाटककारों के अतिरिक्त डॉ॰लक्ष्मीकांत वर्मा, मणि मधुकर, डॉ॰लाल, रमेश बक्षी, हमीदुल्ला तथा रामेश्वर प्रेम आदि ने भी इस परम्परा को विकसित करने में अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है। परंतु नाटक के क्षेत्र में पूरी तरह से समर्पित होकर उतरने वाले और भुवनेश्वर प्रसाद द्वारा प्रवर्तित असंगत नाट्य-परम्परा को हिन्दी में सही अर्थों में पुनः प्रतिष्ठित करने वाले नाटक्कार के रूप में मुद्राराक्षस का स्थान अत्यंत महत्त्वपूर्ण है।

मुद्राराक्षस ने मानव जीवन की असंगतियों को व्यापक धरातल पर देखा, परखा, जाना और भोगा भी है। अतः उनके नाटकों में मानव जीवन की जिन असंगतियों का चित्रण हुआ है वे पूर्ण रूप से यथार्थ और वस्तुस्थिति-निदर्शक हैं। रक्षक के रूप में भक्षक बना मानव, मानव में विकसित होती पशुता, उसकी परवशता और बौद्धिक नपुंसकता को उन्होंने मार्मिक ढंग से चित्रित किया है। आर्थिक विपन्नता तथा नयी नैतिकता को उन्होंने इस प्रकार प्रस्तुत किया है कि आर्थिक विपन्नता से विवश हुआ मानव और नैतिकता के पुराने मूल्यों को तोड़कर दिशाभ्रष्ट हुआ उसका जीवन उनके नाटकों में स्पष्टतया उभरता है। उनके नाटकों में आमतौर पर उच्च,मध्य और निम्न वर्ग के पात्रों के जीवन की असंगतियों का ही चित्रण हुआ हे, पर यहाँ दृष्टव्य है कि उच्च वर्ग के पात्रों में ही असंगतियों के दर्शन अधिक होते हैं। इस संबंध में यह भी ध्यान रखने की जरूरत है कि नाटककार ने अपने नाटकों के लिए जिन पात्रों का चुनाव किया है, वे प्रायः असामान्य (Abnormal) हैं। अतः साधारण मनुष्य से ये पात्र निश्चित रूप से कुछ भिन्न दिखाई देते हैं।

नाटककार ने तथाकथित सुविधाभोगी उच्च वर्गीय महिलाओं की अदम्य काम-वासना तथा क्रूरता को इस ढंग से प्रस्तुत किया है कि ये नारियाँ नारी कम और पुरुष ज़्यादा दिखाई देती हैं। सेक्स के संबंध में वे इतनी आक्रामक है कि लगता है उनका अंग-अंग

यौन-वासना का भूखा है। "तेन्दुआ" नाटक की रेनु राय और मिसेज मदान माली को सेक्सुअली एक्साइट करने के लिए जिन थर्ड डिग्री तरीकों से उसे टार्चर करती हैं उनमें उनकी क्रूरता, पशुता और सेक्स-अभिलाषा मुखर होती है। नाटककार ने अपने नाटकों में मनोवैज्ञानिक धरातल पर मानव के विभिन्न मनोविकारों, मनोविकृतियों और मनोरचनाओं या रक्षा युक्तियों को अंकित किया है। नाटककार ने दैनिक जीवन की भूलें, मनोविक्षिप्तता और लैंगिक विकृतियों को इस ढंग से प्रस्तुत किया है कि ये मनोविकृतियाँ ही आज के मानव जीवन की विभिन्न स्थितियाँ बन गई हैं। नाटक में चित्रित यौन-विकृतियों के बारे में यह कहा जा सकता है कि नाटककार ने इन विकृतियों का चित्रण कथ्य की अनिवार्य माँग के रूप में किया है। अतः इस संबंध में श्लीलता-अश्लीलता का प्रश्न निर्माण करना अनुचित है। पर यह भी सच है कि यौन विकृतियों का यह चित्रण प्रायः बीभत्स रस का ही परिचायक बन गया है। मुख्य रूप से ये यौन विकृतियाँ उच्च वर्ग के पात्रो में ही परिलक्षित होती हैं।

परिस्थितियों के चक्रव्यूह में फँसा आज का टूटा मानव मनचाहे ढंग से जी भी नहीं सकता और मर भी नहीं सकता क्योंकि जीना-मरना कुछ भी उसके हाथ में नहीं है। वह तो जैसे-तैसे अपने जीवन को ढोने का असफल प्रयास करता है। मानव जीवन की इस विवशता और छटपटाहट को नाटककार मुद्राराक्षस ने मनोवैज्ञानिक ढंग से उद्घाटित किया है। यद्यपि मनोविज्ञान की दृष्टि से पात्रों का चरित्रांकन करना नाटककार को अभीष्ट नहीं है, फिर भी पात्रों के चरित्र में सहज ही मनोविज्ञान के दर्शन किये जा सकते हैं। स्वप्न, भीड़ और फैशन आदि पर भी नाटककार ने जो प्रकाश डाला है वह पूर्णतया मनोवैज्ञानिक है। "तिलचट्टा" नाटक के स्वप्न-दृश्यों पर फ्रायड और एडलर का प्रभाव स्पष्ट देखा जा सकता है। देव का स्वप्न फ्रायड के स्वप्न सिद्धांत के अनुसार है तो केशी का स्वप्न फ्रायड के स्वप्न सिद्धांत के अनुसार। नाटककार ने भीड़ मनोविज्ञान का चित्रण सक्रिय और निष्क्रिय दोनों रूपों में किया है तथा फैशन को स्त्री वर्ग के संबंध में चित्रित किया है।

मुद्राराक्षस के असंगत नाटकों का शिल्प भी विशेष महत्त्व का है। मुद्राराक्षस एक ऐसे नाटककार है, जिन्होंने संवाद और भाषा-शिल्प के माध्यम से मानव के विसंगत जीवन बोध को व्यापक रूप में प्रस्तुत किया है। वास्तव में असंगत नाटकों में कथा और घटनाएँ महत्त्वपूर्ण नहीं होती, महत्त्वपूर्ण होती हैं स्थितियाँ जो जीवन की विसंगतियों को दर्शाती हैं। पात्रों के चरित्र-चित्रण में भी मुद्राराक्षस ने उनके खंड जीवन को ही

चित्रित किया है। उनके नाटकों के पात्र प्रायः खंडित या विभाजित व्यक्तित्त्व के द्योतक हैं। **"योर्स फेथफुली"** में मरी हुई कंचन रूपा की सारे नाटक में उपस्थिति नाटककार की विशिष्ट तकनीक है। मुद्राराक्षस की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि उन्होंने अपने नाटकों में संवादों की ऐसी संरचना की है जो उनके विसंगत जीवन को चित्रित करने में सक्षम है। प्रायः संबोधनहीन, टूटे फूटे, ऊलजलूल और यांत्रिक संवादों का प्रयोग उनके नाटकों में विशेष मात्रा में हुआ है। जहाँ एक ओर उन्होंने अपने नाटकों में अतिनाटकीय और मौन से युक्त संवादों का प्रयोग किया है, वहाँ दूसरी ओर आशिल्पन और लय का विरोध भी किया है। मुद्राराक्षस ने अपने असंगत नाटकों में मुख्यतया हरकत की तथा हाशिए वाली भाषा का प्रयोग किया है। गागर में सागर भरने की किमया उनकी हाशिए वाली भाषा ही कर सकती है। उनके पात्र भाषा के माध्यम से जितना कहते हैं, उससे कहीं अधिक अपनी हरकतों से अभिव्यक्त करते हैं। उनकी भाषा की यह एक महत्त्वपूर्ण विशेषता है कि वह हमेशा अभिव्यक्ति का ठण्डापन बरकरार रखती है। बेहद गरमागरम शब्दों को भी उनके पात्र इस ठण्डेपन से प्रयुक्त करते हैं कि भाषा सेक्स को नहीं, त्रासदी को उभारती है। मुद्राराक्षस एक ऐसे शब्दशिल्पी हैं जिन्होंने अपनी भाषा में हिन्दी के अतिरिक्त अन्य बोली भाषाओं और विदेशी भाषाओं से भी शब्द ग्रहण किये हैं और उन शब्दों के जरिए मानव जीवन की असंगतियों को इस ढंग से अभिव्यक्त किया है कि शब्द भाषा की प्रकृति में घुलकर एकमद "फिट" हो गये हैं। अपशब्दों के प्रति उनका विशेष आग्रह दिखाई देता है, जो मानव के असम्बद्ध क्रिया-व्यापारों को दर्शाता है।

नाटककार ने गीत और संगीत का आयोजन पात्रों की मानसिक स्थितियाँ और उन पर बीती हुई मुसीबतों को नग्न यथार्थ के रूप में चित्रित करने के लिए किया है। ये गीत प्रासंगिक हैं। प्रसाद या प्रेमी के नाटकों में जो गीतों की भरमार दिखाई देती थी, वह मुद्राराक्षस के नाटकों में प्रायः नहीं है। जो गीत प्रयुक्त हुए हैं वे कथावस्तु की माँग के अनुसार बिल्कुल स्वाभाविक हैं। गीत की अपेक्षा गद्य का सशक्त प्रयोग उनके नाटकों की एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है। उनके नाटकों में गद्य में भी कोरस का प्रयोग हुआ है जो अपने आप में एक विशिष्ट उपलब्धि है।

मुद्राराक्षस ने अपने असंगत नाटकों में मानव जीवन की विभिन्न असंगतियों को व्यक्त करने के लिए बिम्बों और प्रतीकों का अत्यधिक प्रयोग किया है। उनके नाटकों में प्रयुक्त कुछ बिम्ब और प्रतीक तो पूर्णतया सटीक है, पर कुछ ऐसे बिम्ब और प्रतीक

भी उनके नाटकों में प्रयुक्त हुए हैं जो काफी दुरूह और जटिल हैं। इस कारण सामान्य दर्शक उनके नाटकों को अच्छी तरह से समझ नहीं पाता। शीर्षकों के लिए पशु-प्रतीकों का प्रयोग मुद्राराक्षस की सबसे महत्त्वपूर्ण विशेषता है। उनके "तिलचट्टा" और "तेन्दुआ" नाटक इसके उत्कृष्ट उदाहरण हैं। आज के मानव की पाशवी वृत्ति को अभिव्यक्त करने के लिए ही उन्होंने पशु-प्रतीकों का प्रयोग किया है।

मुद्राराक्षस स्वयं एक सजग नाटककार, प्रथितयश अभिनेता और कुशल निर्देशक होने के कारण उनके असंगत नाटक मंचीयता की दृष्टि से हिन्दी रंग नाटकों के नये प्रतिमान बन गये हैं। मुद्राराक्षस के नाटकों का मंच तड़क-भड़क और दिव्यता-भव्यता से दूर बिल्कुल सीधा-साधा, यथार्थ और प्रतीकात्मक है। "योर्स फेथफुली" और "तिलचट्टा" नाटकों में उन्होंने एक ही सेट पर पात्रों के क्रिया-व्यापार और उनके जीवन की असंगत स्थितियों को दर्शाया है। इसके विपरीत "तेन्दुआ" में दो सेट पर तीन अंक का कार्य-व्यापार और "मरजीवा" में तीन सेट पर पाँच अंको का कार्य-व्यापार चित्रित किया है। पर यहाँ यह ध्यान में रखने की जरूरत है कि उनका मंच-विधान जटिल न होकर सामान्य ही है। मानव जीवन की असंगतियों को व्यक्त करना ही असंगत नाटकों का प्रमुख उद्देश्य होने के कारण इन पात्रों के अभिनय के लिए कुशल अभिनेता और अभिनेत्रियों की जरूरत है। "तेन्दुआ" नाटक में माली का मूक अभिनय और "तिलचट्टा" नाटक में देव का नपुंसक मौन आक्रोश कोई कुशल अभिनेता ही मंच पर प्रस्तुत कर सकता है। इसी प्रकार "तेन्दुआ" नाटक में रेनु राय और मिसेज मदान तथा "योर्स फेथफुली" नाटक में कंचन रूपा का अभिनय करने के लिए अभिजात अभिनेत्रियाँ ही उपयुक्त हो सकती हैं। यहाँ यह बात विशेष दृष्टव्य है कि उनके "मरजीवा" नाटक के नाट्य-प्रस्तुति के समय यद्यपि निर्देशक फैजल अल्काजी ने मूल आलेख में कहीं-कहीं परिवर्तन भी किया- विशेषकर अंत में, फिर भी नाटक में मूलतः ऐसा नाट्य, तेजी और क्रूरता है कि जो दर्शक को अंत तक बाँधे रखती है। उनके नाटकों के प्रति दर्शकीय और पाठकीय संवेदनाओं में कभी-कभी परस्पर विरोधी प्रतिक्रियाएँ भी दिखाई देती हैं। वास्तव में ये प्रतिक्रियाएँ विरोधी न होकर नाटक की प्रस्तुति के विविध आयामों को ही उजागर करती है।

यद्यपि मुद्राराक्षस के असंगत नाटकों पर पाश्चात्य ऐब्सर्ड नाट्य-परम्परा का विशेष प्रभाव दिखाई देता है, फिर भी हमें यह नहीं भूलना चाहिए कि उनके नाटकों में मानव जीवन की जो विसंगतियाँ दर्शायी गई हैं, वे भारतीय परिवेश और भारतीय जन-जीवन को भी प्रचुर मात्रा में रेखांकित करती है। ये विसंगतियाँ मूलतः मानव द्वारा

निर्मित हैं और मानव में निहित पशुता को प्रकट करती हैं। हिन्दी के असंगत नाटककारों में पूर्णकी असंगत नाटक लिखने वाले नाटककारों में मुद्राराक्षस ही एक ऐसे नाटककार हैं, जिन्होंने हिन्दी नाटक साहित्य के इतिहास में चार मुख्य और दो गौण असंगत नाटक लिखकर अपना महत्त्वपूर्ण योगदान दिया है और इस दृष्टि से उनका असंगत नाटककारों में शीर्षस्थ स्थान स्वीकारा जा सकता है।

हिन्दी नाटक साहित्य का अध्ययन करने पर एक बात स्पष्ट होती है कि हिन्दी में असंगत नाटकों की संख्या सीमित ही है। इसके पीछे मुख्यतया चार कारण दिखाई देते हैं- 1·दुरूह और क्लिष्ट बिम्ब-प्रतीक योजना, 2·बोलचाल के और अंग्रेजी के शब्दों का अधिकाधिक प्रयोग 3·श्लीलता-अश्लीलता का प्रश्न और 4·भारतीय सकारात्मक आध्यात्मिक जीवन-दृष्टि। यद्यपि असंगत नाटकों की संख्या अनुपात में अत्यल्प ही है, फिर भी मानव जीवन के नग्न यथार्थ और विसंगत जीवन बोध की अभिव्यक्ति का एक सशक्त माध्यम होने के नाते उनका महत्त्व नकारा नहीं जा सकता।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1· उपजीव्य ग्रंथ

लेखकानुक्रम 1·	लेखक 2·	ग्रंथानुक्रम 3·	ग्रंथ 4·	संस्करण 5·	प्रकाशन 6·
1·	मुद्राराक्षस	1·	तिलचट्टा	द्वि·1976	संभावना प्रकाशन, हापुड़ (उ·प्र·)
		2·	तेन्दुआ	प्र·1975	राजेश प्रकाशन,दिल्ली
		3·	मरजीवा	अनुल्लिखित	वही
		4·	योर्स फेथफुली	अनुल्लिखित	वही

2· संदर्भ ग्रंथ

अ· हिन्दी -

2·	डॉ·अज्ञात	5·	भारतीय रंगमंच का विवेचनात्मक इतिहास	प्र·1978	पुस्तक संस्थान,कानपुर
3·	डॉ·उषा सक्सेना	6	हिन्दी उपन्यासों का शिल्पगत विकास	प्र·1972	शोध साहित्य प्रकाशन, इलाहाबाद
4·	डॉ·ओउम् प्रकाश अवस्थी	7·	नयी कविता:रचना प्रक्रिया	वही	पुस्तक संस्थान,कानपुर
5·	डॉ·केदारनाथ सिंह	8·	हिन्दी के प्रतीक नाटक और रंगमंच	1985	विद्या विहार,कानपुर
6·	डॉ·गणेशदत्त गोड	9·	आधुनिक हिन्दी नाटकों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन	1965	सरस्वती पुस्तक सदन, आगरा
7·	डॉ·गिरीश रस्तोगी	10	समकालीन हिन्दी नाटकों की संघर्ष चेतना	.1990	हरियाणा साहित्य अकादमी, चंडीगढ़
8·	डॉ·गोविंद चातक	11·	आधुनिक हिन्दी नाटकः भाषिक और संवादीय संरचना	प्र·1982	तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली·
		12·	नाट्भाषा	प्र·1981	वही
		13·	रंगमंच:कला और दृष्टि	प्र·1976	वही
9·	डॉ·गोविंद रजनीश	14·	समसामयिक हिन्दी कविता:विविध परिदृश्य	अनुल्लिखित	देवानगर प्रकाशन,जयपुर

1. 2.	3. 4.	5.	6.
10.डॉ.चंद्रशेखर	15.समकालीन हिंदी नाटकः कथ्य चेतना	प्र.1982	आत्माराम एण्ड सन्स, दिल्ली.
11.जगदीश नंदिनी	16 आठवे दशक के संदर्भ में समसामयिक कविता में विसंगति	प्र.1984	दिनमान प्रकाशन,दिल्ली
12.जयदेव तनेजा	17.आज के हिन्दी रंग नाटकः परिवेश और परिदृश्य	प्र.1980	तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली
	18.समसामयिक हिन्दी नाटक और रंगमंच	प्र.1978	वही
	19.हिन्दी रंगकर्म : दशा और दिशा	प्र.1988	वही
13.डॉ.जयभगवान गुप्ता	20.हिन्दी रेडियो नाटक : अद्यतन अध्ययन	प्र.1982	मंथन पब्लिकेशन्स, रोहतग
14.डॉ.जे.डी.शर्मा	21.मनोविज्ञान की पद्धतियाँ एवं सिद्धान्त	षष्ठ1991	विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
15.डॉ.तुकाराम रा. पाटील	22समसामयिक हिन्दी नाटकों में खंडित व्यक्तित्त्व अंकन	-	अप्रकाशित
16.डॉ.दशरथ ओझा	23 आज का हिन्दी नाटक : प्रगति और प्रभाव	प्र.1984	राजपाल एण्ड,सन्स, दिल्ली.
17.देवराज उपाध्याय	24.साहित्य का मनोवैज्ञानिक अध्ययन	अनुल्लिखित	एस.चान्द एण्ड कंपनी, नई दिल्ली
18.अनु.देवेंद्रकुमार वेदालंकार	25.फ्रायड मनोविश्लेषण	1985	राजपाल एण्ड सन्स, दिल्ली
19.डॉ.नरनारायण राय	26.नटरंग विवेक	प्र.1981	सन्मार्ग प्रकाशन,दिल्ली
संपा "	27.असंगत नाटक और रंगमंच	प्र.1981	वाणी प्रकाशन,दिल्ली
20.नेमिचंद्र जैन	28.रंग-दर्शन	प्र.1967	अक्षर प्रकाशन,दिल्ली
21.ब्रजराज किशोर	29.हिन्दी नाटक और रंगमंचः समकालीन परिदृश्य	प्र.1988	जनप्रिय प्रकाशन,दिल्ली
22.मणि मधुकर	30.रसगंधर्व	दि.1978	राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली

1.	2.	3.	4.	5.	6.
23	डॉ·मधु जैन	31	यशपाल के उपन्यासों का मनोवैज्ञानिक अध्ययन	प्र·1977	अभिलाशा प्रकाशन, कानपुर
24	डॉ·ममता शुक्ला	32	मन्नू भंडारी के कथा साहित्य का मनोविश्लेषणात्मक अध्ययन	प्र·1989	जवाहर पुस्तकालय, मथुरा
25	डॉ·मिथलेश रोहतगी	33	हिन्दी कहानी का मनो-वैज्ञानिक अध्ययन	प्र·1979	शलभ बुक हाऊस,मेरठ
26	डॉ·मृदुला गुप्ता	34	बच्चन के काव्य में बिम्ब योजना	प्र·1986	शब्द और शब्द,दिल्ली
27	डॉ·रमाशंकर त्रिपाठी	35	साहित्य में पात्रःप्रतिमान और परिरेखन	प्र·1987	सरस्वती प्रकाशन मंदिर इलाहाबाद
28	डॉ·रमेश गौतम	36	हिन्दी के प्रतीक नाटक	प्र·1980	नचिकेता प्रकाशन, नई दिल्ली·
29	आ·रामचंद्र शुक्ल	37	चिंतामणी, पहला भाग	1965	इंडियन प्रेस,प्रयाग
30	डॉ·रामजी तिवारी	38	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी समीक्षा में काव्य-मूल्य	प्र·1980	अतुल प्रकाशन,कानपुर
31	डॉ·रामसेवक सिंह	39	एब्सर्ड नाट्य परम्परा	प्र·1970	अक्षर प्रकाशन,दिल्ली
32	डॉ·श्रीमती रीताकुमार	40	स्वातंत्र्योत्तर हिन्दी नाटक : मोहन राकेश के विशेष संदर्भ में	प्र·1980	विभू प्रकाशन, साहिबाबाद
33	डॉ·रीतारानी पालिवाल	41	रंगमंच : नया परिदृश्य	वही	लिपि प्रकाशन,दिल्ली
34	डॉ·लक्ष्मीनारायण लाल	42	रंगभूमि : भारतीय नाट्यसौंदर्य	प्र·1989	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली
35	डॉ·लक्ष्मीराय	43	आधुनिक हिन्दी नाटकः चरित्र-सृष्टि के आयाम	प्र·1979	तक्षशिला प्रकाशन, दिल्ली
36	डॉ·लाभसिंह/ डॉ·गोविंद तिवारी	44	असामान्य मनोविज्ञान के मूल आधार	चतुर्थ1982	विनोद पुस्तक मंदिर, आगरा
37	डॉ·वशिष्ठ ना·त्रिपाठी	45	नाटक के रंगमंचीय प्रतिमान	प्र·1991	जगतराम एण्ड सन्स, दिल्ली
38	संपा· डॉ·विजयकांतधर दुबे	46	साठोत्तरी हिन्दी नाटक	प्र·1983	नचिकेता प्रकाशन दिल्ली

1. 2.	3. 4.	5.	6.
	47·हिन्दी नाटक: प्राक्कथन और दिशाएँ	प्र·1985	अनुभव प्रकाशन,कानपुर
39·डॉ·विश्वभावन देवलिया	48·नाट्य-प्रस्तुतीकरण: स्वरूप और प्रक्रिया	प्र·1986	सूर्य प्रकाशन,दिल्ली
40·डॉ·वीणा श्रीवास्तव	49·भारतीय एवं पाश्चात्य स्वप्न सिद्धांत	प्र·1980	बिहार ग्रंथ कुटीर, पटना
41·डॉ·शांति मलिक	50·हिन्दी नाटकों की शिल्पविधि का विकास	प्र·1971	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस, दिल्ली
42·डॉ·शिवराम माली	51·स्वच्छंतावादी नाटक और मनोविज्ञान	प्र·1976	पुस्तक संस्थान,कानपुर
43·डॉ·शिवराम माली / डॉ·सुधाकर गोकाककर	52·नाटक और रंगमंच (डॉ·चंदूलाल दुबे अभिनंदन ग्रंथ)	प्र·1979	नेशनल पब्लिशिंग हाऊस दिल्ली
44·डॉ·शेखर शर्मा	53·समकालीन संवेदना और हिन्दी नाटक	प्र·1988	भावना प्रकाशन,दिल्ली
45·डॉ·एस्·एस्·माथुर	54·सामान्य मनोविज्ञान	बारहवाँ 1982	विनोद पुस्तक मंदिर,आगरा
46·डॉ·सत्यवती त्रिपाठी	55·आधुनिक हिन्दी नाटकों में प्रयोगधर्मिता	प्र·1991	राधाकृष्ण प्रकाशन, दिल्ली
47·डॉ·सुन्दरलाल कथूरिया	56·समसामयिक हिन्दी नाटक: बहुआयामी व्यक्तित्व	प्र·1979	साहित्यकार प्रकाशन, दिल्ली
48·डॉ·सुषम बेदी	57·हिन्दी नाट्य: प्रयोग के संदर्भ में	प्र·1984	पराग प्रकाशन,दिल्ली
49·हमीदुल्ला	58·उलझी आकृतियाँ	प्र·1973	भारतीय ज्ञानपीठ, नई दिल्ली
50·डॉ·हुकुमचंद राजपाल	59·विविध बोध: नये हस्ताक्षर	प्र·1976	स्मृति प्रकाशन, इलाहाबाद
आ· अंग्रेजी -			
51.J.N.Mundra & Dr.S.C.Mundra	60.A History of English literature Vol.III	1987	Prakash Book Depot,Bareilly
52.Dr.Ram Sevak Singh	61.Absurd Drama	1973	Hariyana Prakashan, Delhi.

1. 2.	3. 4.	5.	6.
53.Sigmund Freud	62.A General Introduction to psychoanalysis	16^{th} 1966	Washington-square press, New York

3· कोशग्रंथ

अ· हिन्दी -

54·संपा·डॉ·ब्रजमोहन / डॉ·बदरीनाथ कपूर	63·मिनाक्षी हिन्दी अंग्रेजी कोश	प्र·1980	मिनाक्षी प्रकाशन,मेरठ
55·संपा (प्र·) रामचंद्र वर्म्मा	64·मानक हिन्दी कोश पहला खण्ड	प्र·1965	हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
	65·वही, दूसरा खण्ड	वही	वही
	66·वही, पाँचवा खण्ड	वही	वही
56·संपा·सत्यप्रकाश एवं बलभद्रप्रसाद मिश्र	67·मानक अंग्रेजी हिन्दी कोश	प्र·1971	हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
57· संपा· डॉ·हरदेव बाहरी	68·बृहद अंग्रेजी हिन्दी कोश, पहला भाग	1969	ज्ञान मंडल लिमिटेड, वाराणसी

आ· अंग्रेजी -

58.Editor Dr.David Macdonald	69.The Encyclopaedia of Mammals:1	1984	George Allen & Unwin, London
59.Editor Grolier	70.The Encyclopaedia Americana Vol.1	First 1829	Incorporated Manufactured in the U.S.A.
60.Editor Maurice & Robert Burton	71.Encyclopaedia of the Animal kingdom	1976	Octopus Books Limited,London

इ· अन्य -

61·मुद्राराक्षस	72·अनुसंधाता के नाम मुद्राराक्षस का पत्र		

योग - उपजीव्य ग्रंथ	-	4
" संदर्भ ग्रंथ	-	58
" कोश ग्रंथ	-	9
" अन्य	-	1
कुलयोग -		72